Imp.

आज के संदर्भ में कबीर का मूल्यांकन

अतीत के अनेक रचनाकारों का हि
साहित्यिक इतिहास और सांस्कृतिक संग्रहालय का मृत अंश बन चुका
पर कबीर का साहित्य इतिहास अप्रासंगिक और निष्प्राण नहीं
आज की विचार धारात्मक उत्पटक और वितंडावाद (सामाजिक
के बीच अनेक बार कबीर की बानियों का हवाला दिया जाना
और उनकी उक्तियों की सार्थकता बताया जाना तथा आज के
सवर्ण हिंदूवादी आग्रहों तथा मुस्लिम कट्टरपंथ से लड़ने के लि
बुलावा दिया जाता है।

विगत 50 वर्षों की हिन्दी समालोचना
में विवादों के केन्द्र में कबीर ही रहे हैं—

विवाद के विषय :- 1. विगत साहित्यिक विरासत का मूल्यां
2. भक्तिकाल के मूलभूत अंतर्विरो
की परीक्षा तथा
3. साहित्य में रहस्यवाद की भूमिका

दरअसल अतीत के कलात्मक साहित्य के मूल्यांक
के संदर्भ में आज की समालोचना के सामने दोहरी समस्या है—
1. उस विशेष काल (क) में उक्त साहित्य की ऐतिहासिक
2. आज के युग में उक्त साहित्य की सार्थकता।

अपनी पुस्तक 'कबीर वाणी' में अली
सरदार जाफरी ने कहा है:- " दिखावटी धर्म से विद्रोह और
वास्तविक धर्म के प्रचार का क्रान्तिकारी पहलू यह था कि उसने
मध्ययुग के मनुष्य को आत्म प्रतिष्ठा, आत्मसम्मान और आत्मविश्वास
दिया। मनुष्य को मनुष्य से प्रेम करना सिखाया।"
- x x x x .

"हमें आज भी कबीर के नेतृत्व की जरूरत है,
उस रोशनी की जरूरत है जो इस संत के दिल से फैल रही थी। आज
दुनिया आजाद हो रही है। विज्ञान की आश्चर्यजनक प्रगति ने मनुष्य का
महत्व बढ़ा दिया है। उसने अपने बाहुबल में ईश्वर भर दी है।
मनुष्य सितारों पर कमंदें फेंक रहा है। फिर भी वह तबाह है,
संकटग्रस्त है, दुःखी है। वह रोगों में बँधा हुआ है, भ्रांतियों में निमग्न
है। उसके बीच रस्मों की दीवारें खड़ी हैं। साम्प्रदायिक द्वेष है, की-
से तलवारें खींची हुई हैं

प्रमुख बिन्दु :-

1. कबीर युगसंधि के ऐसे चौराहे पर उत्पन्न हुए थे, जब भिन्न-भिन्न धर्म साधनाओं और सामाजिक विचार-वृत्तियों के बीच अंतहीन टकराहट का सिलसिला शुरु हो गया था।

हि० हिंदुत्व ⟷ इस्लाम
निर्गुण ⟷ सगुण
ज्ञान ⟷ अविद्या
योग ⟷ भक्ति

2. शास्त्रीय ग्रंथों और पोथियों का ज्ञान प्रेमपूर्ण मानवीय संबंधों के रास्ते में अवरोध बन गया था। अतः, हि विचार धारा की जरूरत थी। कबीर अहंकार से मुक्ति, सदाचार के पालन और नैतिकता का पाठ पढ़ा रहे थे। डॉ० रामकुमार वर्मा की दृष्टि में, "कबीर ने धर्म और जीवन में कोई भेद नहीं रहने दिया। जीवन की सात्विक अनिवार्यता ही धर्म का सोपान है। जिस धर्म के लिए जीवन की स्वाभाविक और सात्विक गति एवं प्रगति में परिवर्तन करना पड़े, उसे हम धर्म की संज्ञा नहीं दे सकते।"

नए मानववाद के लिए यह अद्भुत आंदोलन था। सभी धर्मों, पंथों एवं मत-मतांतरों को स्वीकार कर कबीर एक तत्व पर जोर दे रहे थे, जिसे भिन्न-भिन्न विद्वान एकेश्वरवाद, अद्वैतवाद, निर्गुणवाद, ज्ञानमार्ग आदि नाम देते हैं।

- हरि है खांड रेत महि बिखरी, हाथी चुनी न जाई।
कहि कबीर गुरी भली बुझाई, कीटी होई के खाई॥

रेत → संसार रूपी रेत
हाथी → मन रूपी अहंकार और मद से उन्मत्त हाथी
चींटी — सहज और सूक्ष्म भक्ति

हरि, ईश्वर, राम, गोविन्द आदि उस परम तत्त्व के प्रतीक हैं। कबीर के यहाँ ईश्वर तत्त्व और मानव प्रेम दोनों अभिन्न हैं वे पिता, माता, मित्र, पति, प्रेयसी सभी प्रकार के मानवीय रिश्तों द्वारा प्राप्य है।

3. जाति प्रथा और वर्णाश्रम व्यवस्था पर कबीर ने मध्ययुग में किसी भी संत से अधिक प्रहार किया है।

4. कबीर की वाणियों की तात्विक मीमांसा के क्रम में प्रायः सभी समालोचकों ने यह स्वीकार किया है कि कबीर ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार करते हैं। इन विद्वानों के अनुसार, निर्गुण ईश्वर, अज्ञात परमसत्ता या सृष्टि के रचयिता ब्रह्म में कबीर विश्वास करते हैं।

जीववादी दर्शन

किन्तु, कबीर पारख प्रयागराज के संत अभिलाष दास के अनुसार, कबीर ब्रह्मवादी नहीं जीववादी हैं। वे जीवात्मा को ही परम तत्त्व मानते हैं। कबीर अगम, अगोचर, परोक्ष निर्गुण के समर्थक न होकर इहलौकिकता और जीववाद के समर्थक थे। उदाहरण के लिए, अभिलाष दास निम्नलिखित साखी की व्याख्या करते हैं।

साँच कहौं तो है नहीं, झूठहि लागु पियारी।
मो सिर ढारै ढेंकुली, सींचै और कि क्यारी॥

अर्थात् यदि सच्ची-सच्ची कहूँ तो कहना पड़ेगा कि परमात्मा है ही नहीं। पर लोग यह नहीं मानते और झूठी बात ही उन्हें पसंद आती है, झूठी बातें ही उन्हें प्रिय लगती हैं। लोग मेरे सिर पर ढेंकुली ढारते हैं और दूसरे की क्यारी सींचते हैं अर्थात् अनुयायी मेरा कहलाते हैं और परिपोषण दूसरे मतों का करते हैं।

पुनः, वे दूसरा उदाहरण देते हैं :—

अलख निरंजन लखै न कोई। जेहि बंधे बंधा सब लोई॥
जेहि झूठे सब बाँधु अयाना। झूठा बचन साँच कै माना॥

अर्थात् अलक्षित पुरुष/ब्रह्म को किसी ने देखा नहीं। पर अचरज की बात है कि परमेश्वर की अवधारणा से सब लोग बँध गए हैं। जिस झूठ की मान्यता में सब अज्ञानी बंधे हैं, उस झूठे वचन को उन्होंने सच्चा करके मान रखा है।